اٰیاتھا ۴۰ ﴿۷۸﴾ سُوْرَةُ النَّبَاِ مَكِّيَّةٌ ﴿۸۰﴾ رکوعاتھا ۲

सूरए नबा मक्किय्या है, इस में चालीस आयतें और दो रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह्‌म वाला[1]

عَمَّ يَتَسَآءَلُوْنَ ۚ﴿۱﴾ عَنِ النَّبَاِ الْعَظِيْمِ ۙ﴿۲﴾ الَّذِیْ هُمْ فِيْهِ

येह[2] आपस में काहे की पूछगछ कर रहे हैं[3] बड़ी ख़बर की[4] जिस में वोह

مُخْتَلِفُوْنَ ؕ﴿۳﴾ كَلَّا سَيَعْلَمُوْنَ ۙ﴿۴﴾ ثُمَّ كَلَّا سَيَعْلَمُوْنَ ﴿۵﴾ اَلَمْ نَجْعَلِ

कई राह हैं[5] हां हां अब जान जाएंगे फिर हां हां जान जाएंगे[6] क्या हम ने

الْاَرْضَ مِهٰدًا ۙ﴿۶﴾ وَّ الْجِبَالَ اَوْتَادًا ۪ۙ﴿۷﴾ وَّ خَلَقْنٰكُمْ اَزْوَاجًا ۙ﴿۸﴾ وَّ جَعَلْنَا

ज़मीन को बिछौना न किया[7] और पहाड़ों को मेख़ें[8] और तुम्हें जोड़े बनाया[9] और तुम्हारी

نَوْمَكُمْ سُبَاتًا ۙ﴿۹﴾ وَّ جَعَلْنَا الَّيْلَ لِبَاسًا ۙ﴿۱۰﴾ وَّ جَعَلْنَا النَّهَارَ مَعَاشًا ۪﴿۱۱﴾

नींद को आराम किया[10] और रात को पर्दापोश किया[11] और दिन को रोज़गार के लिये बनाया[12]

وَّ بَنَيْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعًا شِدَادًا ۙ﴿۱۲﴾ وَّ جَعَلْنَا سِرَاجًا وَّهَّاجًا ۪ۙ﴿۱۳﴾ وَّ اَنْزَلْنَا

और तुम्हारे ऊपर सात मज़बूत चुनाइयां चुनीं (ता'मीर कीं)[13] और उन में एक निहायत चमक्ता चराग़ रखा[14] और भरी

1 : सूरए नबा : इस को सूरए तसाउल और सूरए "عَمَّ يَتَسَآءَلُوْنَ" भी कहते हैं, येह सूरत मक्किय्या है, इस में दो रुकूअ़, चालीस या इक्तालीस आयतें, एक सो तिहत्तर कलिमे, नव सो सत्तर हर्फ़ हैं। 2 : कुफ़्फ़ारे क़ुरैश 3 : नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने जब अहले मक्का को तौहीद की दा'वत दी और मरने के बा'द ज़िन्दा किये जाने की ख़बर दी और क़ुरआने करीम की तिलावत फ़रमा कर उन्हें सुनाया तो उन में बाहम गुफ़्त्गूएं शुरूअ़ हुईं और एक दूसरे से पूछने लगे कि मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم क्या दीन लाए हैं ? इस आयत में उन की गुफ़्त्गूओं का बयान है और तफ़्ख़ीमे शान के लिये इस्तिफ़्हाम के पैराए में बयान फ़रमाया या'नी वोह क्या अ़ज़ीमुश्शान बात है जिस में येह लोग एक दूसरे से पूछगछ कर रहे हैं, इस के बा'द वोह बात बयान फ़रमाई जाती है 4 : "बड़ी ख़बर" से मुराद या क़ुरआन है या सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की नुबुव्वत और आप का दीन या मरने के बा'द ज़िन्दा किये जाने का मस्अला। 5 : कि बा'ज़े तो क़त्ई इन्कार करते हैं बा'ज़े शक में हैं और क़ुरआने करीम को उन में से कोई तो सेह्‌र कहता है, कोई शे'र कोई कहानत और कोई और कुछ, इसी त़रह सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को कोई साहिर कहता है, कोई शाइ़र, कोई काहिन। 6 : इस तक्ज़ीब व इन्कार के नतीजे को। इस के बा'द अल्लाह तआ़ला ने अपने अ़जाइबे क़ुदरत में से चन्द चीज़ें ज़िक्र फ़रमाईं ताकि येह लोग उन की दलालत से अल्लाह तआ़ला की तौह़ीद को जानें और येह समझें कि अल्लाह तआ़ला आ़लम को पैदा करने और इस के बा'द इस को फ़ना करने और बा'दे फ़ना फिर ह़िसाब व जज़ा के लिये पैदा करने पर क़ादिर है। 7 : कि तुम इस में रहो और वोह तुम्हारी क़रार गाह हो। 8 : जिन से ज़मीन साबित व क़ाइम रहे 9 : मर्द व औ़रत 10 : तुम्हारे जिस्मों के लिये ताकि इस से कोफ़्त और तकान दूर हो और राह़त ह़ासिल हो। 11 : जो अपनी तारीकी से हर चीज़ को छुपाती है 12 : कि तुम इस में अल्लाह तआ़ला का फ़ज़्ल और अपनी रोज़ी तलाश करो। 13 : जिन पर ज़माना गुज़रने का असर नहीं होता और कोहनगी (पुराना पन) व बोसीदगी उन तक राह नहीं पाती, मुराद इन चुनाइयों से सात आस्मान हैं। 14 : या'नी आफ़्ताब जिस में रोशनी भी है और गरमी भी।

www.dawateislami.net

مِنَ الْمُعْصِرٰتِ مَآءً ثَجَّاجًا ﴿۱۴﴾ لِّنُخْرِجَ بِهٖ حَبًّا وَّ نَبَاتًا ﴿۱۵﴾ وَّ جَنّٰتٍ

बदलियों से ज़ोर का पानी उतारा कि उस से पैदा फ़रमाएं अनाज और सब्ज़ा और घने

اَلْفَافًا ﴿۱۶﴾ اِنَّ یَوْمَ الْفَصْلِ كَانَ مِیْقَاتًا ﴿۱۷﴾ یَّوْمَ یُنْفَخُ فِی الصُّوْرِ

बाग़[15] बेशक फ़ैसले का दिन[16] ठहरा हुवा वक़्त है जिस दिन सूर फूंका जाएगा[17]

فَتَاْتُوْنَ اَفْوَاجًا ﴿۱۸﴾ وَّ فُتِحَتِ السَّمَآءُ فَكَانَتْ اَبْوَابًا ﴿۱۹﴾ وَّ سُیِّرَتِ

तो तुम चले आओगे[18] फ़ौजों की फ़ौजें और आस्मान खोला जाएगा कि दरवाज़े हो जाएगा[19] और पहाड़ चलाए

الْجِبَالُ فَكَانَتْ سَرَابًا ﴿۲۰﴾ اِنَّ جَهَنَّمَ كَانَتْ مِرْصَادًا ﴿۲۱﴾ لِّلطّٰغِیْنَ

जाएंगे कि हो जाएंगे जैसे चमक्ता रेता दूर से पानी का धोका देता बेशक जहन्नम ताक में है सरकशों का

مَاٰبًا ﴿۲۲﴾ لّٰبِثِیْنَ فِیْهَاۤ اَحْقَابًا ﴿۲۳﴾ لَا یَذُوْقُوْنَ فِیْهَا بَرْدًا وَّ لَا شَرَابًا ﴿۲۴﴾

ठिकाना उस में क़रनों (मुद्दतों) रहेंगे[20] उस में किसी त़रह की ठन्डक का मज़ा न पाएंगे और न कुछ पीने को

اِلَّا حَمِیْمًا وَّ غَسَّاقًا ﴿۲۵﴾ جَزَآءً وِّفَاقًا ﴿۲۶﴾ اِنَّهُمْ كَانُوْا لَا یَرْجُوْنَ

मगर खौलता पानी और दोज़ख़ियों का जलता पीप जैसे को तैसा बदला[21] बेशक उन्हें ह़िसाब का ख़ौफ़

حِسَابًا ﴿۲۷﴾ وَّ كَذَّبُوْا بِاٰیٰتِنَا كِذَّابًا ﴿۲۸﴾ وَ كُلَّ شَیْءٍ اَحْصَیْنٰهُ كِتٰبًا ﴿۲۹﴾

न था[22] और हमारी आयतें ह़द भर झुटलाईं और हम ने[23] हर चीज़ लिख कर शुमार कर रखी है[24]

ربع

فَذُوْقُوْا فَلَنْ نَّزِیْدَكُمْ اِلَّا عَذَابًا ﴿۳۰﴾ اِنَّ لِلْمُتَّقِیْنَ مَفَازًا ﴿۳۱﴾ حَدَآىٕقَ

अब चखो कि हम तुम्हें न बढ़ाएंगे मगर अ़ज़ाब बेशक डर वालों को काम्याबी की जगह है[25] बाग़ हैं[26]

وَ اَعْنَابًا ﴿۳۲﴾ وَّ كَوَاعِبَ اَتْرَابًا ﴿۳۳﴾ وَّ كَاْسًا دِهَاقًا ﴿۳۴﴾ لَا یَسْمَعُوْنَ فِیْهَا

और अंगूर और उठते जोबन वालियां एक उ़म्र की और छलक्ता जाम[27] जिस में न कोई

15 : तो जिस ने इतनी चीजें पैदा कर दीं वोह इन्सान को मरने के बा'द ज़िन्दा करे तो क्या तअ़ज्जुब ! नीज़ इन अश्या का पैदा करना ह़कीम का फ़े'ल है और ह़कीम का फ़े'ल हरगिज़ अ़बस और बेकार नहीं होता और मरने के बा'द उठने और सज़ा व जज़ा के इन्कार करने से लाज़िम आता है कि मुन्किर के नज़्दीक तमाम अफ़्आ़ल अ़बस हों और अ़बस होना बात़िल तो बअ़्स व जज़ा का इन्कार भी बात़िल, इस बुरहाने क़वी से साबित हो गया कि मरने के बा'द उठना और ह़िसाब व जज़ा ज़रूर है इस में शक नहीं। 16 : सवाब व अ़ज़ाब के लिये 17 : मुराद इस से नफ़्ख़ए अख़ीरा है। 18 : अपनी क़ब्रों से ह़िसाब के लिये मौक़िफ़ की त़रफ़ 19 : और उस में राहें बन जाएंगी उन से मलाएका उतरेंगे। 20 : जिन की निहायत नहीं या'नी हमेशा रहेंगे। 21 : जैसे अ़मल वैसी जज़ा या'नी जैसा कुफ़्र बद तरीन जुर्म है वैसा ही सख़्त तरीन अ़ज़ाब उन को होगा। 22 : क्यूं कि वोह मरने के बा'द उठने के मुन्किर थे। 23 : लौहे मह़्फ़ूज़ में 24 : उन के तमाम नेक व बद आ'माल हमारे इ़ल्म में हैं, हम उन पर जज़ा देंगे और आख़िरत में वक़्ते अ़ज़ाब उन से कहा जाएगा 25 : जन्नत में जहां उन्हें अ़ज़ाब से नजात होगी और हर मुराद ह़ासिल होगी। 26 : जिन में क़िस्म क़िस्म के नफ़ीस फलों वाले दरख़्त 27 : शराबे नफ़ीस का।

www.dawateislami.net

لَغْوًا وَّلَا كِذّٰبًا ﴿٣٥﴾ جَزَآءً مِّنْ رَّبِّكَ عَطَآءً حِسَابًا ﴿٣٦﴾ رَّبِّ السَّمٰوٰتِ

बेहूदा बात सुनें और न झुटलाना[28] सिला तुम्हारे रब की त़रफ़ से[29] निहायत काफ़ी अ़त़ा वोह जो रब है आस्मानों का

وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الرَّحْمٰنِ لَا يَمْلِكُوْنَ مِنْهُ خِطَابًا ﴿٣٧﴾ يَوْمَ

और ज़मीन का और जो कुछ इन के दरमियान है रह़मान कि उस से बात करने का इख़्तियार न रखेंगे[30] जिस दिन

يَقُوْمُ الرُّوْحُ وَالْمَلٰٓئِكَةُ صَفًّا ۙ لَّا يَتَكَلَّمُوْنَ اِلَّا مَنْ اَذِنَ لَهُ الرَّحْمٰنُ وَ

जिब्रील खड़ा होगा और सब फ़िरिश्ते परा बांधे (सफ़ें बनाए) कोई न बोल सकेगा[31] मगर जिसे रह़मान ने इ़ज़्न दिया[32] और

قَالَ صَوَابًا ﴿٣٨﴾ ذٰلِكَ الْيَوْمُ الْحَقُّ ۚ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ مَاٰبًا ﴿٣٩﴾

उस ने ठीक बात कही[33] वोह सच्चा दिन है अब जो चाहे अपने रब की त़रफ़ राह बना ले[34]

اِنَّآ اَنْذَرْنٰكُمْ عَذَابًا قَرِيْبًا ۖ يَّوْمَ يَنْظُرُ الْمَرْءُ مَا قَدَّمَتْ يَدٰهُ وَ

हम तुम्हें[35] एक अ़ज़ाब से डराते हैं कि नज़्दीक आ गया[36] जिस दिन आदमी देखेगा जो कुछ उस के हाथों ने आगे भेजा[37] और

يَقُوْلُ الْكٰفِرُ يٰلَيْتَنِيْ كُنْتُ تُرٰبًا ﴿٤٠﴾ ع ٢

काफ़िर कहेगा हाए मैं किसी त़रह़ ख़ाक हो जाता[38]

اٰیاتها ٤٦ | سُوْرَةُ النّٰزِعٰتِ مَكِّيَّةٌ ٨١ ٧٩ | رکوعاتها ٢

सूरए नाज़िआ़त मक्किय्या है, इस में छियालीस आयतें और दो रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान रह़्म वाला[1]

28 : या'नी जन्नत में न कोई बेहूदा बात सुनने में आएगी न वहां कोई किसी को झुटलाएगा। **29 :** तुम्हारे आ'माल का **30 :** ब सबब उस के ख़ौफ़ के। **31 :** उस के रो'ब व जलाल से **32 :** कलाम या शफ़ाअ़त का **33 :** दुन्या में और उसी के मुत़ाबिक़ अ़मल किया। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि ठीक बात से कलिमए त़य्यिबा "لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه" मुराद है। **34 :** अ़मले सालेह़ कर के ताकि अ़ज़ाब से मह़फ़ूज़ रहे। **35 :** ऐ काफ़िरो ! **36 :** मुराद इस से अ़ज़ाबे आख़िरत है। **37 :** या'नी हर नेकी बदी उस के नामए आ'माल में दर्ज होगी जिस को वोह रोज़े क़ियामत देखेगा। **38 :** ताकि अ़ज़ाब से मह़फ़ूज़ रहता। ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि रोज़े क़ियामत जब जानवरों और चौपायों को उठाया जाएगा और उन्हें एक दूसरे से बदला दिलाया जाएगा, अगर सींग वाले ने बे सींग वाले को मारा होगा तो उसे बदला दिलाया जाएगा, इस के बा'द वोह सब ख़ाक कर दिये जाएंगे। येह देख कर काफ़िर तमन्ना करेगा कि काश मैं भी ख़ाक कर दिया जाता। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने इस के येह मा'ना बयान किये हैं कि मोमिनीन पर अल्लाह तआ़ला के इन्आ़म देख कर काफ़िर तमन्ना करेगा कि काश वोह दुन्या में ख़ाक होता या'नी मुतवाज़ेअ़ होता, मुतकब्बिर व सरकश न होता। एक क़ौल मुफ़स्सिरीन का येह भी है कि काफ़िर से मुराद इब्लीस है जिस ने ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام पर त़ा'ना किया था कि वोह मिट्टी से पैदा किये गए और अपने आग से पैदा किये जाने पर इफ़्तिख़ार किया था, जब वोह ह़ज़रते आदम और उन की ईमानदार औलाद के सवाब को देखेगा और अपने आप को शिद्दते अ़ज़ाब में मुब्तला पाएगा तो कहेगा काश मैं मिट्टी होता या'नी ह़ज़रते आदम की त़रह़ मिट्टी से पैदा किया हुवा होता। **1 :** सूरए النّٰزِعٰت मक्किय्या है, इस में दो रुकूअ़, छियालीस आयतें, एक सो सत्तानवे कलिमे, सात सो तिरपन ह़र्फ़ हैं।

www.dawateislami.net